जगद्गुरु श्रीगौरकिशोर दास बाबाजी महाराज

(शिक्षा समन्वित जीवनी)

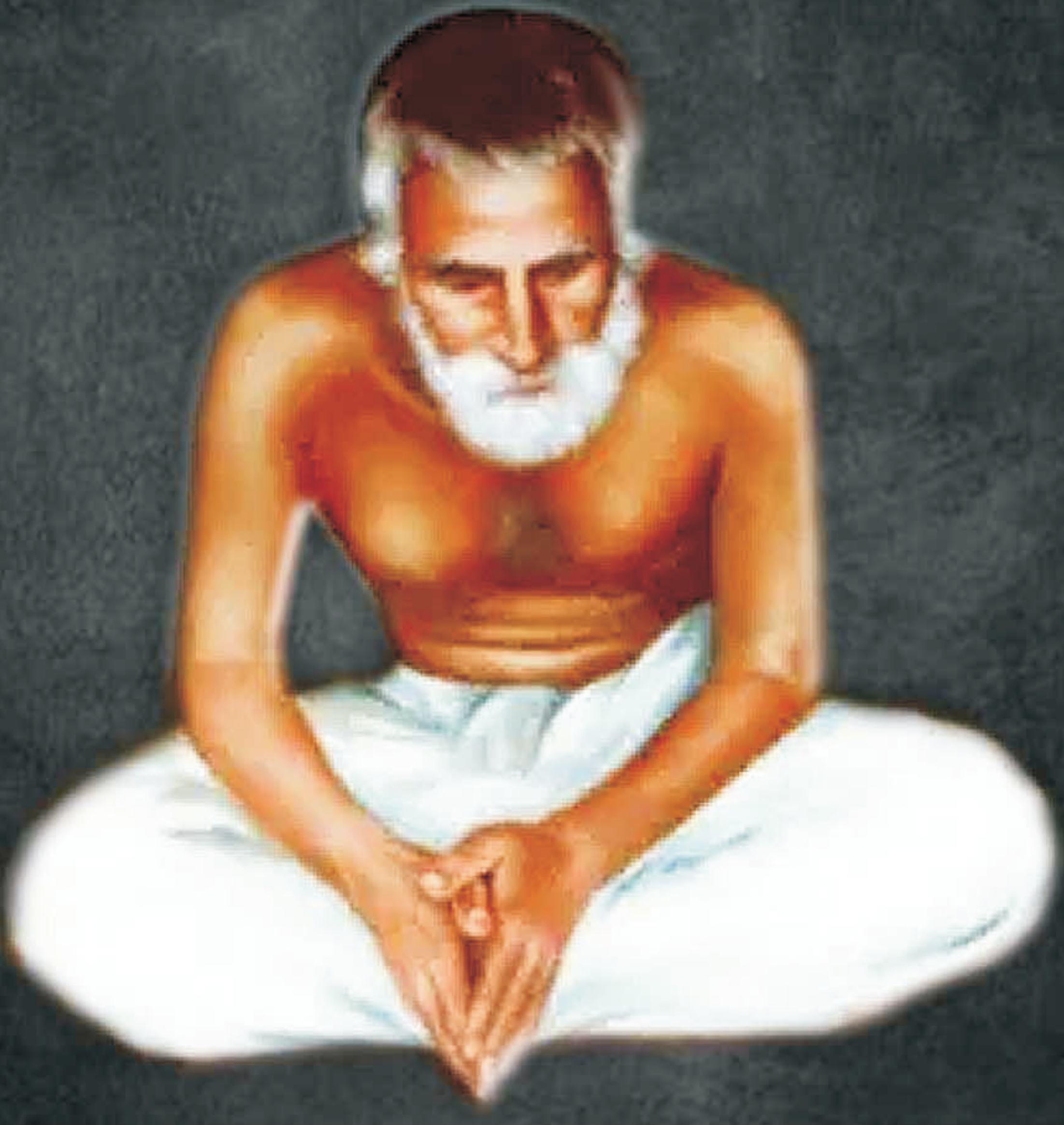

श्रील प्रभुपाद भक्ति सिद्धान्त सरस्वती ठाकुर जी की दिव्य लेखनी से संकलित

SGD

जगद्गुरु श्रीगौरकिशोर

“मैं तो वैष्णव नहीं हूँ”

एक बार श्रील गौरकिशोर दास बाबाजी महाराज ने श्रील प्रभुपाद जी के पास एक सौ रुपये जमा करके रखे थे। श्रील प्रभुपाद ने उन रुपयों को सुरक्षित रखने के लिए बैंक में जमा करवा दिया। श्रील प्रभुपाद कहीं बाहर गए हुए थे, इस समय हठात् एक दिन श्रील बाबाजी महाराज ने श्रीमद्

भक्तिविनोद ठाकुर के पास आकर उन रुपयों को लेने की इच्छा की। 'हमारे प्रभुपाद ने उसे बैंक में रखा है, उनके न आने से उसे बैंक से निकाला नहीं जा सकता'– यह बात श्रील भक्तिविनोद ठाकुर जी द्वारा श्रील बाबाजी महाराज को बताने पर भी उन्होंने उसी समय उन रुपयों की विशेष आवश्यकता बताई। अन्त में श्रील भक्तिविनोद ठाकुर ने अपनी निजी जमा पूंजी में से एक सौ रुपये जुगाड़ करके दिए। वही रुपये वृन्दावन में अपने नाम से किसी प्रसिद्ध व्यक्ति के पास भेजे

गये थे। तब श्रील बाबाजी महाराज ने कहा "मुझे लोगों ने वैष्णव समझकर मेरे भोग करने के लिए ये सब रुपये दिए हैं, मैं तो वैष्णव नहीं हूँ। सुना है, ब्रज में वैष्णव हैं, इसलिए उनकी सेवा के लिए ये रुपये भेज रहा हूँ।" श्रील बाबाजी महाराज को वैष्णव-विचार से लोग जो सब धन दान करते, श्रील बाबाजी महाराज उसे स्वयं कभी भी ग्रहण नहीं करते थे, बल्कि वैष्णवों की सेवा के लिए दे देते। श्रील बाबाजी महाराज ने कहा- माधुकरी भिक्षा का द्रव्य निर्गुण

होता है, उसे हरि भजनमय जीवन निर्वाह करने के लिए यथायोग्य ग्रहण करने के अतिरिक्त दूसरों का दान ग्रहण करने से चित्त मलिन होता है एवं हरिभजन में विघ्न उपस्थित होता है।

श्रीलगुरुदेव